ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 193-194
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

गाँधीजी के राजनैतिक सत्याग्रह पर उपाश्रित विचार

1. डॉ0 नीतू मौर्य
2. रंजय द्विवेदी

1. असिस्टेंट प्रोफेसर – इतिहास विभाग, राजकीय पी० जी० कालेज, मुसाफिरखाना, 2. शोध अध्येता– डॉ० राममनोहर लोहिया अवाध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ0प्र0), भारत

Received-19.03.2024, Revised-25.03.2024, Accepted-29.03.2024 E-mail: ranjaydwivedi83@gmail.com"

सारांशः ***महात्मा गाँधी जी भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक जन नेता थे। उनके द्वारा पूरे स्वतन्त्रता आन्दोलन की नींव सत्य और अहिंसा पर डाली गयी। सत्य और अहिंसा पर आधारित पहली लड़ाई उनके द्वारा सर्वप्रथम दक्षिणी अफ्रीका में लड़ी गयी। उन्होंने वहाँ पर एक वकील के रूप में भारतीय व्यापारियों, श्रमिकों एवं दक्षिण अफ्रीका के किसानों के साथ हो रहे भेद–भाव के विरुद्ध आवाज उठायी, एवं उनके हितों की रक्षा हेतु संघर्ष किया। इसके लिए उनको कई बार जेल की हवा भी खानी पड़ी। लेकिन गाँधीजी द्वारा सत्य के लिए लड़े जा रहे इस संघर्ष से अफ्रीकी समाज में एक सकारात्मक संदेश पहुँचा। धीरे–धीरे ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ एक आन्दोलन शिशु के रूप में जन्म लेने लगा और तत्कालीन मध्य वर्ग शिक्षित समाज की राजनीतिक चेतना जागृत होने लगी। उपाश्रित दृष्टिकोण के इतिहासकार रणजीत गुहा का मानना है कि 'गाँधीजी किसी भी समाज में एक द्रष्टा के रूप में देखे जा सकते हैं।' गाँधीजी की विचारधारा थी कि किसी भी अच्छे समाज का निर्माण तभी हो सकता है जब उस पर प्रभाव डालने वाला राजनैतिक चिन्तन सामाजिक भेदभाव की अवधारणा से मुक्त हो। अतः गाँधीजी अपने राजनैतिक चिंतन में सामाजिक विषमता, सामाजिक रुढ़ियाँ, भेदभाव, छुआ–छूत, ब्रिटिश हुकूमत की दोषपूर्ण सरकारी नीतियों के खिलाफ स्वतंत्रतापूर्वक मुक्तकंठ से आवाज उठाया। गाँधीजी ने अपने राजनैतिक यात्राओं के दौरान हर सामाजिक तबके को स्वावलम्बी एवं मजबूत बनाने का अथक प्रयत्न किया। इस शोधपत्र में महात्मा गाँधी जी के राजनैतिक चिंतन, स्वतंत्रता हेतु राजनीतिक संघर्ष और उनके राजनैतिक आत्मबल पर उपाश्रित इतिहासकारों का दृष्टिकोण एवं शोधार्थी का मत देने का प्रयास किया गया है।***

कुंजीभूत शब्द– आन्दोलन, राजनैतिक, आध्यात्मिक जन, भारतीय व्यापारियों,सकारात्मक संदेश, मध्य वर्ग शिक्षित समाज।

गाँधीजी के राजनीतिक चिंतन में सत्य के प्रयोग की अवधारणा– गाँधीजी ने अपने जीवन में सत्य के प्रयोग रस्किन की पुस्तक 'अन टू दिस लास्ट' पुस्तक पढ़कर किया। यह पुस्तक उन्हें उनके एक धार्मिक मित्र मि0 पोलाक ने दिया था।1 गाँधीजी पर इस पुस्तक का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा, क्योंकि उनका मानना था कि इस पुस्तक में लिखी गयी बात उनके अंतर्मन में चल रही जिज्ञासा को शांत करने वाली थी। बाद में गाँधीजी द्वारा इस पुस्तक का अनुवाद गुजराती भाषा में 'सर्वोदय' नाम से किया गया। गाँधी जी के राजनैतिक चिंतन पर उपाश्रित दृष्टिकोण रखने वाले रणजीत गुहा महोदय का मानना है कि गाँधी जी ने अपने सर्वोदय के विचार को इस पुस्तक के माध्यम से निम्नपूर्वक समझा और अपने जीवन यात्रा में प्रत्यक्ष प्रयोग किया:–

1) सभी की भलाई में मेरी भलाई निहित है।
2) वकील और नाई की कीमत एक जैसी होनी चाहिए। क्योंकि कोई छोटा और बड़ा नहीं है। अतः गाँधीजी ने समानता के सिद्धान्त पर जोर देने की बात मन में आयी।
3) सादगीपूर्वक जीवन जीने वाले किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है। अतः पहला प्रयोग करते हुए उन्होंने फिनिक्स फार्म की स्थापना की।

गाँधीजी ने अपने राजनीतिक चिंतन में 'सेवा शुश्रुषा' के भाव को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। क्योंकि उनका मानना है कि सभी की भलाई में ही उनकी भलाई निहित है। और सेवा–सुश्रुषा के भाव होने से एक अच्छे चरित्र वाले राष्ट्र का निर्माण संभव हो सकता है, लेकिन साथ में ही वह यह मानते हैं कि यह कार्य तभी संभव है जब मनुष्य में ब्रम्हचर्य का पालन करने और उसमें सात्विक–आत्मशुद्धि का विचार हो क्योंकि भोग–विलास और संतति के पालन–पोषण में व्यक्ति को समय नहीं मिल पाता।

गाँधीजी ने अपने सेवा–शुश्रुषा के भाव को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि इससे उनका तात्पर्य देश के सामान्य नागरिक के भलाई से है। उनका विचार है जब तक असहाय और अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति का भला नहीं होता तब तक किसी विकसित देश का निर्माण संभव नहीं है। अतः राष्ट्र को अंकित छोर में खड़े व्यक्ति की चिंता करनी चाहिए। लेकिन इसके लिए व्यक्ति के सेवाभाव में मलीनता का स्थान नहीं होना चाहिए। उनका विचार था कि ब्रम्हचर्य में लेशमात्र का हिंसात्मक विकार होने पर वह पूर्णता को नहीं प्राप्त कर सकेगा। गाँधीजी द्वारा अपने ब्रम्हचर्य के वैचारिक अवधारणा को सर्वप्रथम फिनिक्स फार्म में अपने मित्र 'वेस्ट' के समक्ष रखी गयी थी। इस तरह से गाँधीजी के सत्याग्रह के पूर्वाभाव में सर्वप्रथम 'आत्मशुद्धि' का भाव पाया जाता है अर्थात् आत्मशुद्धि के बाद ही सत्याग्रह का स्थान आता है।

यहाँ पर स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि सत्याग्रह का पहले नाम 'सदाग्रह' था। जिसे एक प्रतियोगिता के दौरान इस शब्द को मगनलाल गाँधी द्वारा दिया गया था और बाद में इसके बीच में 'य' अक्षर बढ़ाकर गाँधीजी ने सत्याग्रह नाम दिया और तब से इस लोक बीजमंत्र में दुनिया के समक्ष एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया कि आज भी दुनिया इस पथ पर चलने के लिए अपना मार्ग खोज पाती है। गाँधीजी का मानना था कि किसी भी उद्देश्य की प्राप्ति सत्य के मार्ग से और शुचितापूर्ण संसाधन से प्राप्त की जानी चाहिए। अतः अपने जीवन के किसी भी उद्देश्यपूर्ण कार्य के लिए उन्होंने अनुचितपूर्ण संसाधन का सहारा लेने से मना किया है और इसी कारण चौरीचौरा हत्याकाण्ड के बाद उन्होंने अपने असहयोग आंदोलन को 12 फरवरी, 1922 को वापस ले लिया और इस अप्रत्याशित वैचारिक फैसले के बाद उनको अपने ही लोगों का विरोध का सामना करना पड़ा। डॉ0 अम्बेडकर द्वारा इस फैसले के बाद कहा गया कि 'गाँधीजी

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

राजनीतिक धूल तो उड़ाते हैं लेकिन राजनीतिक स्तर नहीं उठाते' और इसी वैचारिक फैसले के बाद सी0आर0 दास और मोतीलाल नेहरू ने गाँधीजी के नेतृत्व से अलग होने हुए अपनी एक नयी पार्टी स्वराज पार्टी बना ली। हालांकि उनका आपसी कोई निजी विरोध नहीं था और वे एक दूसरे का सम्मान करते रहे।

गाँधीजी पर यह अक्सर राजनीतिक आरोप लगता रहा है कि वह भगत सिंह को फाँसी से बचाने का प्रयास नहीं किए जिसपर उपाश्रित इतिहासकारों का मत है कि ऐसे–ऐसे निराधार आरोप गलत हैं जो कि गाँधीजी की प्रतिष्ठा को धूमिल करने की एकमात्र साजिश है। क्योंकि गाँधीजी का आन्दोलन एक विचारधारा की लड़ाई थी जो सत्य और अहिंसा पर आधारित थी और वह वायसराय के समक्ष हिंसावादी तर्क नहीं प्रस्तुत करना चाहते थे क्योंकि ऐसा करने से उनके अहिंसक सिद्धान्त का समूल नाश हो जाता और फिर वह कभी भी राष्ट्रीय आंदोलन को एक नयी दिशा नहीं दे पाते।

गाँधीजी पर आम जन–मानस में एक और अवधारणा व्याप्त है कि वह आजादी के अन्तिम दौर में अपने सत्याग्रह के सिद्धान्तों से विमुख होने लगे थे क्योंकि उन्होंने भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान ''करो–मरो'' का नारा दिया इस पर उपाश्रित इतिहासकार रणजीत गुहा सहित अन्य इतिहासकार का भी लगभग सर्वसम्मत है कि गाँधीजी के इस 'करो–मरो' नारे से तात्पर्य अपने सर्वस्व को बलिदान कर देने से है। क्योंकि गाँधी द्वितीय विश्वयुद्ध को भारतीय हित में आपदा को अवसर के रूप में भुनाने पर जोर दे रहे थे। क्योंकि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश हुकूमत कमजोर हो रही थी और चारों ओर वह युद्ध हार रही थी और गाँधीजी इसी दृश्य को देखकर अपने सम्बोधन में कह रहे थे कि 'अभी नहीं तो कभी नहीं'। वह आह्यवाहन कर रहे थे कि वह अपनी पूरी ताकत से आन्दोलन को जन समर्थन दें और उसको मजबूत बनायें जिसकी आवाज विश्व के दूसरे कोने तक सुनायी पड़े। और भारतीय पक्ष में गाँधी जी विश्व का समर्थन पा सकें।

गाँधीजी राजनीतिक चिन्तन में भेद–भाव का प्रथम विचार– गाँधीजी समाज में फैले दोषपूर्ण परम्पराओं को राजनैतिक निर्माण में बाधा मानते थे उनका विचार था कि जब तक समाज में भेद–भाव व रुढ़िवादी समस्या रहेगी तब तक राजनीतिक चेतना का विकास समाज में नहीं हो सकता अतः पढ़ाई के लिए समुद्र पार जाने की बात जब गाँधीजी ने दृढ़ निश्चय होकर सोची तो पंचायत ने कहा कि– जाति का ख्याल है कि पढ़ाई के लिए जो तूने विलायत जाने का विचार किया है वह ठीक नहीं है वहाँ पर साहबों के साथ तुम्हारा खाना–पीना, मिलना–जुलना होगा जिससे धर्म की रक्षा नहीं की जा सकती लेकिन मोहनदास द्वारा विनम्रता के साथ कहा गया कि वह विलायत जाने के लिए कृतसंकल्पित हैं।

गाँधीजी ने अपने विचारों में उल्लेख किया है कि जब वह नटाल की राजधानी मेरित्सवर्ग पहुँचे तो पहले दर्जे के टिकट के बावजूद उन्हें आखिरी डिब्बे में बैठने के लिए कहा गया। वह इसके लिए तैयार नहीं हुए तो उन्हें जबरन धक्का देकर नीचे उतार दिया गया इस पर प्रथम बार गाँधीजी के अंतःचेतना में भेद–भाव के विरुद्ध संचार हुआ। गाँधीजी के शब्दों में– ''मैंने अपने धर्म पर विचार किया, या तो मुझे अपने अधिकारों के लिए लड़ना है या लौट जाना चाहिए। गाँधीजी को रंग–भेद के खिलाफ पहली बार एहसास हुआ था इसकी जड़ें बहुत गहरी हैं यह महारोग का लक्षण है और इसके लिए उन्होंने दक्षिणी अफ्रीका में लगभग बीस वर्ष संघर्ष किया। भारत आने पर अनेक दलित उत्थान हेतु रचनात्मक कार्यक्रम चलाये। और सन् 1933 में छुआछूत विरोधी आन्दोलन की शुरुआत की गयी तथा अश्पृश्यता निवारण हेतु देश भर में यात्रा की। गाँधी जी जीवनपर्यन्त उस सत्य के लिए संघर्ष करते रहे।

द्वितीय स्रोत–

1– हिन्द स्वराज या दिन इंडियन होमरूल–1909 –महात्मा गाँधी
2– सत्य का प्रयोग–1927 – महात्मा गाँधी
3– द लाइफ ऑफ महात्मा गाँधी – लुईस फिशर

प्राथमिक स्रोत–

1– फ्रीडम स्ट्रगल इन उ0प्र0 इन्फार्मेशन डिपार्टमेन्ट, उ0प्र0।
2– राष्ट्रीय अभिलेखागार जनपद–नई दिल्ली से प्राप्त प्रकाशित सूचनाएं।
3– राष्ट्रीय अभिलेखागार महानगर, लखनऊ से प्राप्त प्रकाशित सूचनाएं।

*****